श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष- अभ्यास - ७

दिसम्बर-२०२२

प्रश्न - पत्र

गुणांक - १००

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. कर्मकांडी और चतुर्वेदी के रुप में ..... की प्रसिद्धी थी ।
२. सभी शस्त्रो में ..... मुख्य शस्त्र है ।
३. चौदपूर्वधर महात्मा परमात्मा के दर्शन करने के लिये ..... शरीर बनाते हैं ।
४. मेरु पर्वत की तलहटी में होने से ..... तरीके भी जान जाता है ।
५. मिथ्यात्व मोहनीय ही उसके दलिक विशुद्ध हो तब ..... कहलाता है ।
६. जिसमें जीवों का ..... हो ऐसे मार्ग से संपति नहीं कमाई जाती ।
७. ..... अवगाहना अन्य शरीरो से बडी होती है ।
८. विद्याधर मनुष्यों और आभियोगिक देवों की श्रेणियाँ ..... उपर है ।
९. कारण में कार्य का उपचार करके कर्मादान को ..... मानने में आया है ।
१०. गति के किस भेद में उत्पन्न होना यह निश्चित करनेवाला कर्म ..... है ।
११. श्री अकंपित गणधर ..... अनशन करके निर्वाण पाये ।
१२. चद्रवर्ती काकीणीरत्न से स्वयं का नाम ..... उपर पूर्व दिशा में लिखते हैं ।
१३. तीर्थंकर गणधर ..... शरीर धारण करते हैं ।
१४. जहाँ के व्यापारी ..... व्यवसायी हो ऐसे क्षेत्र में व्यापार करना ।
१५. अंग, उपांग, और अंगोपांग ..... शरीर को नहीं होते ।
१६. नारकी जीव मर कर दूसरे ही भव में ..... होते नहीं ।
१७. वैताढ्य की दक्षिण मेखला पर ..... आदि शहर हैं ।
१८. नाम कर्म की ..... प्रकृतियाँ बंध उदय और उदिरणा में होती है ।
१९. मैं चौमासे में घर का ..... करवाऊंगा नहीं ।
२०. धर्म में बाधा न आवे इस तरह ..... साथ व्यापार करना ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. गरुड देव का निवास स्थान कहाँ है ?
२. व्यापार में द्रव्य शुद्धि संभालने के लिये किसका त्याग करना चाहिये ?
३. अकंपित ब्राम्हण का व्यवसाय क्या था ?
४. देवता और असुरों के समुह किस भगवान के पास आते थे ?
५. पर्वत उपर होते हुए भी किसकी गिनती भूमिकूट में होती है ?
६. आत्मा को कोई भी कर्म भोगने के लिए किस कुदरती घटना का आश्रय लेना पडता है ?
७. गुड, शक्कर, घी वगैरह नरम चीजों का व्यापार किस वाणिज्य में आता है ?
८. भावडशाह के पास एक लाख का लेना किसका निकलता था ?
९. विद्याधर मनुष्य किसकी सहायता से स्वयं का इच्छित कार्य करा लेते है ?
१०. शरीर नामकर्म, अंगोपांग नामकर्म की सहायता से क्या प्राप्त होता है ?
११. बहुत से जीवों के घात में क्या निमित्त बनता है ?
१२. पूर्व में बांधे हुए और नये बंधाते पुद्गल को एक करने वाला कर्म कौन सा है ?
१३. आखरी उपायरुप करजदार ने लेनदार को किस तरह कर्ज चुकाना चाहिये ?
१४. आज भी अनेक पंडित किस भूमि में से तैयार होते हैं ?
१५. इस संसार में पाने (प्राप्त करने) जैसा क्या है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) हुलियं २) परुविय ३) अस्ति ४) बाहुरु ५) कर्पणे ६) मीसया ७) उसहकूडा ८) खिंखिणी
९) इयरद १०) विउव्वा ११) सतिलय १२) दुरुत्तर सयं १३) पणिंदि १४) सेसा १५) थोउण
१६) वेयड्ढे १७) तिनगणं १८) मेखला १९) अगंय २०) सकल

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) कर्षण	१) आजिविका	६) विद्या	६) भावशुद्धि
२) उपचय	२) वैक्रिय शरीर	७) गजदंत	७) छीप
३) न्याय विश्वास	३) तीर्थ	८) वायुकाय	८) पुद्गल
४) प्रथम गणधर	४) गौतम	९) शिल्प	९) फोटिक कर्म
५) शांतिनाथ भगवान	५) माल्यवंत	१०) देवशर्मा	१०) महामुनि

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. वीर प्रभु के आठवें गणधर का छद्मस्थ पर्याय कितना ?
२. देवकुरु क्षेत्र में कितने कूट हैं ?
३. कर्मादान के कुल अतिचार कितने है ?
४. मोहनीय कर्म की कुल प्रकृति में से बंध में कितनी प्रकृति होती हैं ?
५. जांबुनद के शाश्वत चैत्य का विस्तार कितना ?
६. भावड के भाग्यशाली पुत्र के उपर उनका कितना कर्ज बाकी था ?
७. महाविदेह क्षेत्र के वैताढ्य श्रेणिओ पर नगर की कुल संख्या कितनी ?
८. पंद्रह कर्मादान में कुकर्म कितने ?
९. विद्युत प्रभ और माल्यवंत गजदंत के उपर कूटो की संख्या कितनी ?
१०. बंधन नाम कर्म के कुल भेद कितने ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. श्रावको ने ज्यादातर स्वयं के सगे भाईयों के साथ व्यापार करना ।
२. कपास के बीज निकालने का कारखाना डालना यह यंत्र पीलन कर्म है ।
३. उत्तम सुवर्ण रत्नो से प्ररुपित प्रकाशमान अलंकारो से देवताओ के अंग देदिप्यमान हैं ।
४. भावड शेठ ने तीसरे पुत्र की पूरी कमाई धर्ममार्ग में वापर डालने का विचार किया ।
५. ढाइ हजार वर्षो पूर्व गौतम गोत्र के ब्राम्हण श्रेष्ठ देवशर्मा मगध में रहते थे ।
६. कर्मादान से कर्मो का बडा जथ्था आत्मा में प्रवेश करता है ।
७. कार्मण शरीर दृष्टि से अदृष्य है पर उसके परिणाम हम क्षण-क्षण अनुभव करते हैं ।
८. चक्रवर्ती का बाण तीर्थ के अधिपति के भवन में जा गिरता है ।
९. विविध भवो में विविध समय पर जरुरी ऐसी शरीर रचना में अनुकल उन उन पुद्गलों का जथ्था संग्रह कर देने वाला कर्म वह शरीर नाम कर्म है ।
१०. प्रत्येक विजय की दो मुख्य नदीया जिस प्रपात कुंड में पडती है उस प्रपात के मध्य ऋषभकूट होता है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. व्यापार करने के लिये हिंमत अति आवश्यक हैं ।
२. जो ब्राम्हण शुद्र जाति के मनुष्य का अन्न खाता है वह नारकी होता है ।
३. जिस काल में तीन प्रकार के चौमासे में जिस जिस पदार्थ में बहुत जीव पडते हो उन पदार्थ का व्यापार नहीं करना ।
४. तं महामुनि महंपि पंजली राग दोस भय मोह वज्जियं ।
५. हाथ अंग है ऊंगलिया उपांग है ।
६. ये पंद्रह अतिचार श्रावक ने जानना पर आचरना नहीं ।
७. आपकी आज्ञा में हूं..... आपकी आज्ञा शिरोमान्य है ।
८. आहारक शरीर बनाने के लिये चाहिये वो आहारक वर्गणा प्रदान करने वाला कर्म वह आहारक शरीर नाम कर्म ।
९. भूमिकूट नाम अनुसार ही ये शिखर पर्वत पर नहीं परंतु सामान्य जमीन पर ही होते हैं ।
१०. मैं पुलिस, फौजदार, इन्स्पेक्टर, डी.एस.पी. की नौकरी नहीं करुंगा ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. श्रावक को कर्मादान क्यों त्याज्य हैं ? २) भरतक्षेत्र में आये तीर्थो के नाम और चक्रवर्ती उन्हें किस तरह साधते हैं ?
३. श्री शांतिनाथ भ. के वंदन के लिये आये देवताओं और असुरों का वर्णन लिखो ।
४. व्यापार के लेन देन में श्रावक का नियम ५) अंगोपांग नाम कर्म ।

उत्तर पत्र लिखे पते पर भेजिए : सौ. काश्मीरा विनोद लोडाया
शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबद (महा.) ४३१ ००१
सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.achalgach.com